DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Samksrit
S.R.A.P. College, Bara chakia
BRABU - Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — I
Subject — Samksrit
Paper — I

5×3=15 Marks

कारक सूत्र-व्याख्या

34. यतश्च निर्धारणम् (2/3/41)

जाति, गुण, क्रिया तथा संज्ञा द्वारा जिस समुदाय से एक भाग की पृथक्ता की गयी हो, उस समुदाय-वाचक शब्द से षष्ठी और सप्तमी हो — यह सूत्रार्थ है। यथा — नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः (मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है) — यहाँ ब्राह्मण एक जाति है और वह मानवसमूह का एक अंश है। ब्राह्मणजाति विशिष्ट जनों को मानवसमुदाय से पृथक् निर्देश करने के कारण नृ-समूहवाचक 'नृणां' और 'नृषु' में 'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र से षष्ठी और सप्तमी हुई। गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा (गायों में काली गाय अधिक दूध देनेवाली है) — यहाँ काली गाय गो-समुदाय का एक अंश है, पृथक्करण का आधार बहुक्षीरता है और कृष्ण गुण की विशिष्टता के कारण गाय विशेष को गौ-समुदाय से अलग निर्देश किया गया है, अतः गो-समूहवाचक 'गवां' और 'गोषु' में उक्त सूत्र से षष्ठी और सप्तमी हुई। इसी प्रकार — गच्छतां गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः (जाते हुओं में दौड़ता हुआ शीघ्र होता है), छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः (छात्रों में मैत्र निपुण है) आदि उदाहरण द्रष्टव्य हैं।